भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर
Indian Institute of Technology Bhubaneswar

प्रेस विज्ञप्ति

आईआईटी भुवनेश्वर में जीवन कौशल प्रबंधन पर एआईसीटीई अटल एफडीपी

भुवनेश्वर, 6 जनवरी 2025: मानविकी, सामाजिक विज्ञान और प्रबंधन स्कूल, आईआईटी भुवनेश्वर द्वारा आयोजित और अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई), भारत द्वारा समर्थित जीवन कौशल प्रबंधन पर पांच दिवसीय संकाय विकास कार्यक्रम का समापन हुआ। 3 जनवरी 2025। एफडीपी में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के संसाधन व्यक्तियों द्वारा आयोजित सैद्धांतिक और साथ ही व्यावहारिक सत्र शामिल थे और इसमें देश भर के संकाय और अनुसंधान विद्वानों ने भाग लिया था।

उद्घाटन समारोह की मुख्य वक्ता श्रीमती मधुस्मिता साहू (आईएएस) ने अपने भाषण से एफडीपी को गति प्रदान की, जिसमें व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में भावनात्मक बुद्धिमत्ता के महत्व पर प्रकाश डाला गया। मनोविज्ञान, दर्शन और साहित्य जैसे विभिन्न विषयों के सिद्धांतों और उदाहरणों का हवाला देते हुए, श्रीमती साहू ने विविध, फिर भी समान रूप से समृद्ध सत्रों की नींव रखी। इस शिक्षण कार्यक्रम का पहला सत्र स्वामी महेशात्मानंदजी (रामकृष्ण मठ और मिशन, भुवनेश्वर) द्वारा दिया गया था, जिन्होंने जीवन कौशल प्रबंधन की आवश्यकता के साथ-साथ जीवन कौशल की अवधारणा को पेश किया था। लेफ्टिनेंट कर्नल (डॉ.) सौम्य प्रकाश ओट्टा और आईपीएस सुश्री सागरिका नाथ (एसपी, खुरधा) ने समय प्रबंधन, नैतिकता और जिम्मेदारी पर सत्र लिया, जिसमें संसाधन व्यक्तियों के व्यक्तिगत अनुभवों ने पूरे पाठ्यक्रम में प्रतिभागियों को प्रसारित अवधारणाओं में जीवन भर दिया। एफडीपी का. सुश्री नाथ ने अपनी पोस्टिंग के दौरान ओडिशा के बालेश्वर जिले में ट्रिपल ट्रेन टक्कर के बारे में बात की। क्यूरियोसिटी पर डॉ. अनुप केलगांवकर के सत्र में नियमित चिंताओं की शिकायत वाले रोगियों के दिलचस्प केस अध्ययन को सामने रखा गया, जब तक कि डॉक्टर ने गंभीर स्वास्थ्य स्थितियों की खोज के लिए आगे की जांच नहीं की। आईआईएमसी, ढेनाकनाल के प्रोफेसर आनंद प्रधान ने व्यक्तिगत मतभेदों और विभिन्न दृष्टिकोणों को सहानुभूति देने और स्वीकार करने में सक्षम होने के लिए सामाजिक और सांस्कृतिक क्षमता की अनिवार्यता पर प्रकाश डाला। नैतिक निर्णय लेने पर एक सत्र डॉ. राजेश पांडा द्वारा लिया गया, जिन्होंने उक्त विषय की जटिलताओं पर प्रकाश डालते हुए विभिन्न केस अध्ययनों का उल्लेख किया। योग और हार्टफुलनेस के माध्यम से तनाव प्रबंधन के व्यावहारिक सत्रों में प्रतिभागियों की उत्साहपूर्ण भागीदारी देखी गई। लगभग सभी सत्रों में प्रतिभागियों के लिए उस विशेष सत्र के सीखने के परिणामों का आकलन करने के लिए गतिविधियाँ शामिल थीं। प्रोफेसर श्रीपाद कर्मलकर (निदेशक, आईआईटी भुवनेश्वर) द्वारा शिक्षाशास्त्र, शिक्षण और शिक्षण पर एक विशेष सत्र लिया गया। उन्होंने छात्रों के सीखने के संकेतकों, इस सीखने को प्रभावित करने वाले कारकों, इन कारकों में शिक्षकों की भूमिका और सीखने में गतिविधियों और गलतियों की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने प्रभावी और कुशल शिक्षण के लिए एक नुस्खा पर भी चर्चा की और उन समस्याओं की पहचान करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला जिन्हें शिक्षार्थियों को हल करने में सक्षम होना चाहिए और किसी पाठ्यक्रम या कार्यक्रम की शुरुआत में सीखने के परिणामों की पहचान करनी चाहिए।

समापन समारोह के फीडबैक और अनुभव साझाकरण खंड में, प्रतिभागियों ने एफडीपी के समन्वयक डॉ. पुण्यश्री पांडा को सत्रों के उनके दृष्टिकोण और डिजाइन के लिए धन्यवाद दिया और बधाई दी, जिसने एफडीपी को समग्र और सफल बनाया। एफडीपी के सह-समन्वयक और मानविकी, सामाजिक विज्ञान और प्रबंधन स्कूल के प्रमुख डॉ. दुखबंधु साहू ने प्रतिभागियों को एफडीपी का हिस्सा बनने और इसे संभव बनाने के लिए धन्यवाद दिया। समापन समारोह के बाद, प्रतिभागियों को पुस्तकालय का दौरा कराया गया और पूरे संस्थान का मनोरम दृश्य दिखाया गया।